BA-I Date Page-1
Paper-I 04/09/2020
Unit-7

Dr. Raj Gopal.
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar.

अनुमान के पंचावयव (Lecture-2)

Five Membered of Inference (Lecture-2)

जब मनुष्य अपने लिए अनुमान करता है तो इसे स्वार्थानुमान कहते हैं। इसमें तीन अवयव होते हैं। पक्ष, साध्य और हेतु इसकी चर्चा की जा चुकी है। लेकिन जब हमें दूसरों के सामने किसी तथ्य को प्रमाणित करने के लिए अनुमान का सहारा लेना पड़ता है तो इसे परार्थानुमान कहते हैं। परार्थानुमान के पाँच अवयव होते हैं। इस कारण इसे पंचावयव अनुमान कहते हैं। ये हैं- प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय एवं निगमण।

(i) प्रतिज्ञा :- अनुमान द्वारा जिस वाक्य को सिद्ध करना चाहते हैं उसे प्रतिज्ञा कहते हैं। जब हम पहाड़ पर आग को सिद्ध करना चाहते हैं। इसे पहले ही स्पष्ट कर देते हैं। जिसे सिद्ध करना है उसको स्पष्ट करना ही प्रतिज्ञा है। 'पहाड़ पर आग है' यह प्रतिज्ञा के रूप में प्रथम वाक्य में रहता है। जब यह सिद्ध हो जाता है तब वह अन्तिम वाक्य में निष्कर्ष के रूप में स्थापित होता है।

(ii) हेतु :→ हेतु का स्थान प्रतिज्ञा के बाद है। अपनी प्रतिज्ञा को सिद्ध करने के लिए जो युक्ति दी जाती है उसे हेतु कहा जाता है। पर्वत पर आग को प्रमाणित करने के लिए हम धुआँ का सहारा लेते हैं। कहते हैं:- पर्वत पर धुआँ है। इसे ही हेतु कहते हैं। हेतु के द्वारा हम अपने पक्ष में साध्य का अस्तित्व प्रमाणित करते हैं।

Scanned with CamScanner

(iii) उदाहरण :- जिस हेतु के आधार पर साध्य को प्रमाणित किया जाता है उसकी पुष्टि के लिए घटना उपस्थित करना उदाहरण है। यदि हम धुआँ के आधार पर आग को प्रमाणित करना चाहते हैं तो इसको प्रमाणित करने के लिए कोई दृष्टांत देना उदाहरण है। जैसे रसोई घर में धुआँ के साथ आग है। दृष्टांत के साथ व्याप्ति का रहना भी आवश्यक है। हेतु और साध्य के बीच अविनाभाव संबंध को व्याप्ति कहते हैं। यह कभी न टूटने वाला संबंध है अतः उदाहरण ऐसा रहना चाहिए जो व्याप्ति संबंध का सूचक हो। जैसे जहाँ धुआँ है वहाँ वहाँ आग है, जैसे रसोई घर में। इसे ही उदाहरण सहित व्याप्ति कहा जाता है। न्याय में इसका स्थान तीसरा है। यह पाश्चात्य न्याय के बृहत वाक्य के समान है।

(iv) उपनयन :⇒ उदाहरण के साथ हेतु और साध्य का व्यापक संबंध दिखलाने के पश्चात अपने पक्ष में उसे दिखलाना ही उपनयन कहा जाता है। धुआँ और आग का जो व्यापक संबंध है उसी का विशेष प्रयोग पहाड़ के संबंध में किया जाता है। जैसे पहाड़ पर धुआँ है। उपनयन ही वह वाक्य है जो पहाड़ पर आग के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। यह पाश्चात्य न्याय के लघु वाक्य के समान है।

(v) निगमन :- पर्वत पर आग है। इसे ही अनुमान में सिद्ध करने चले थे। जब तक यह प्रमाणित नहीं होता तब तक यह प्रतिज्ञा है और जब यह सिद्ध हो जाता है तब इसे निगमन कहा जाता है। निगमन प्रतिज्ञा की पुनरावृत्ति है। यह प्रतिज्ञा हेतु उदाहरण, व्याप्ति वाक्य, उपनयन के द्वारा प्रमाणित वाक्य है।

Scanned with CamScanner